सद्‌गुरवे नमः

महाभारत मीमांसा

पहला : आदि पर्व

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्।
देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत्

नारायण, नरों में उत्तम नर तथा देवी सरस्वती को नमस्कार करके जय की कथा कहना चाहिए।

महाभारत का पहला नाम जय है, फिर भारत है, तब महाभारत है। गीता प्रेस के संस्करण में 'सरस्वतीम्' के बाद 'व्यासम्' है। उपर्युक्त श्लोक में 'चैव' है जो पूना के प्रामाणिक पाठ में है, क्योंकि व्यास अपनी कलम से अपना नमस्कार नहीं लिखेंगे। उपर्युक्त श्लोक का स्पष्टीकरण है–नारायण, नरों में उत्तम नर तथा देवी सरस्वती का नमस्कार करके, ततः– *तब जयम् उदीरयेत्*-जय नामक महाकाव्य का पाठ करना, कथा करना चाहिए। उदीरण का अर्थ है बोलना, उच्चारण करना।

. कथा आरंभ

नैमिषारण्य में महर्षि शौनक का विशाल आश्रम था। उसमें हजारों विद्यार्थी तथा ऋषि रहते थे। महर्षि शौनक का बारह वर्ष तक चलने वाला सत्र था। हजारों तपस्वी ऋषि विद्यमान थे। इतने में सूत लोमहर्षण के पुत्र उग्रश्रवा सौति आ गये जो पुराणों के विद्वान और कथावाचक थे। अतएव तपस्वी ऋषियों ने कथाएं सुनने के लिए उन्हें घेर लिया। उग्रश्रवा ने पूछा–"आपकी तपस्याएं ठीक चल रही हैं न?" इसके बाद वे उनके समर्पित आसन पर विराजमान हुए।

ऋषियों ने पूछा–हे सूतकुमार! आपका आगमन किधर से हो रहा है? सूत जी ने कहा कि राजा परीक्षित के पुत्र जनमेजय के सर्पयज्ञ में व्यास जी रचित

महाभारत की कथा वैशंपायन ने कही है, उसे सुनकर कुरुक्षेत्र के समंत पंचक क्षेत्र में गया, जहां कौरव-पांडव का युद्ध हुआ था। वहीं से मैं यहां आया हूं। आज्ञा कीजिए, मैं आप लोगों को क्या सुनाऊं?

मीमांसा

लोमहर्षण सूत थे, इसलिए उनके पुत्र उग्रश्रवा का विशेषण सौति था। अर्थात सूत-पुत्र। रथचालक और बढ़ई को सूत कहा जाता था जो वर्णवादियों के अनुसार शूद्र है। परंतु उग्रश्रवा सूत का कितना महत्त्व है, यह ऊपर वर्णन से समझा जा सकता है। अतएव वर्णवादी तथा जातिवादी सारा भेदभाव व्यर्थ है।

. ऋषियों की जिज्ञासा और उत्तर

ऋषियों ने सूत जी से कहा कि हम लोग महाभारत की कथा सुनना चाहते हैं। सूत जी ने सृष्टि-उत्पत्ति से कथा आरंभ की। नाम-रूप का भान नहीं था। प्रकाश नहीं था। केवल अंधकार था। उस समय एक बहुत विशाल अंडा प्रकट हुआ। जो सृष्टि का बीज था। अंडे में ज्योतिमय ब्रह्म प्रविष्ट हुआ। उसी अंडे से सारा संसार पैदा हुआ। यह अनादि-अनंत काल-चक्र चल रहा है। इसी में सृष्टि-प्रलय चलते रहते हैं। सृष्टि-उत्पत्ति काल में तैंतीस हजार तैंतीस सौ तैंतीस देवता प्रकट हुए। इसी क्रम में 'मह्य' पैदा हुए। उनके पुत्र 'देवभ्राट' हुए। देवभ्राट के 'सुभ्राट' पैदा हुए। सुभ्राट के तीन पुत्र हुए–दशज्योति, शतज्योति और सहस्रज्योति।

दशज्योति के दस हजार पुत्र पैदा हुए, शतज्योति के एक लाख पुत्र पैदा हुए और सहस्रज्योति के दस लाख पुत्र पैदा हुए। इन्हीं से कुरुवंश, यदुवंश, भरत वंश, ययाति और इक्ष्वाकु के वंश हुए। फिर अन्य राजाओं के वंश चले। वेदव्यास जी ने महाभारत की रचना की। कोई विद्वान उसे विस्तार से कहते हैं और कोई संक्षेप में। कोई 'नारायणं नमस्कृत्य' से महाभारत की कथा आरंभ करता है, कोई 'आस्तीक पर्व' से और कोई 'उपरिचरि वसु' की कथा से प्रारंभ करता है।

वेदव्यास को चिंता हुई कि मेरी रचना महाभारत जो मैं मन में बना लिया हूं, इसे लिखने वाला कौन होगा? ब्रह्मा जी ने आकर उनसे कहा कि तुम गणेश जी का स्मरण करो। वे ही इसे लिख सकते हैं। व्यास जी ने गणेश जी का स्मरण किया, तो वे आ गये। व्यास जी ने उनसे अपना प्रस्ताव रखा कि

महाभारत काव्य मैंने मन में बना लिया है। मैं श्लोकों में बोलता जाऊं और आप उन्हें लिखते जायं।

गणेश जी का अपना अहंकार जगा। उन्होंने कहा–लेकिन मेरी कलम रुकनी नहीं चाहिए। व्यास जी ने गणेश जी के नहला पर दहला जड़ा कि आप बिना समझे कुछ न लिखें। गणेश जी इस शर्त पर मात खा गये।

तब *“ग्रंथग्रंथिम् तदा चक्रे मुनिर्गूढं कुतूहलात्।”* वेदव्यास मुनि कुतूहल वश अपनी पुस्तक के श्लोकों में गांठ लगाने लगे। वे बीच-बीच में ऐसे श्लोक बोलते जो रहस्य भरे होते, जिसका ऊपरी अर्थ कुछ होता और भीतरी कुछ। स्वयं वेदव्यास ने कहा–इस ग्रंथ में आठ हजार आठ सौ श्लोक ऐसे हैं जिनका अर्थ मैं जानता हूं, शुकदेव जानते हैं। संजय जानते हैं कि नहीं इस बात में संदेह है।

मीमांसा

जड़ और चेतन दोनों मूल तत्त्व अनादि हैं। उनके गुण-धर्म, उनमें अनादि स्वतः निहित हैं। उनसे सृष्टि अनादि है। अतएव उसका कहीं आरंभ नहीं है। परंतु नाना मत के लोगों ने सृष्टि का आरंभ मानकर उसकी विचित्र कल्पनाएं की हैं। उन्हीं में से एक कल्पना बड़ा अंडा और उसमें ज्योतिमय ब्रह्म का घुसना है।

‘मह्य’ सूर्य है जो मही (पृथ्वी) में गर्भाधान करता है। सूर्य पृथ्वी पर रहे हुए समुद्र का जल अपनी रश्मियों से खींचकर आकाश में ले जाता है और बादलों द्वारा पृथ्वी पर बरसाता है, तब पृथ्वी गर्भवती होती है और अन्न, फल, वनस्पति, रत्न आदि पैदा करती है। उन्हीं का सेवन कर प्राणी की सृष्टि चलती है।

सुभ्राट के तीन पुत्रों–दशज्योति, शतज्योति और सहस्रज्योति से क्रमशः दस हजार, एक लाख और दस लाख पुत्र होना केवल बालकल्पना है। वेद के सत्यवादी ऋषि सौ वर्ष जीने की कामना करते हैं। सौ वर्ष के भीतर एक मनुष्य को कितने बच्चे पैदा हो सकते हैं, यह सहज समझा जा सकता है।

गणेश एक व्यंग्य चित्र है, काल्पनिक देवता है। उससे महाभारत लिखवाने की बात भी काल्पनिक है। महाभारत पढ़ना चाहिए और उससे लाभ लेना चाहिए।

. **महाभारत, आदि पर्व, अध्याय , श्लोक ।**

. धृतराष्ट्र के मनोभाव का चित्रण

इस प्रथम अध्याय में महाभारत की संक्षिप्त विषय-सूची दी गयी है। इसी क्रम में एक सौ दो (   )वें श्लोक में कहा गया है *"चतुर्विंशतिसाहस्रीं चक्रे भारतसंहिताम्।"* अर्थात वेदव्यास ने चौबीस हजार श्लोकों में भरतसंहिता बनायी जिसे *भारतं प्रोच्यते बुधैः,* विद्वान लोग भारत कहते हैं।

विषय-सूची में कौरव-पांडवों की उत्पत्ति बतायी गयी है। पुनः राग-द्वेष और युद्ध तथा विनाश। सूची में यह बताया गया कि युद्ध में कौरव-पक्ष का पूर्ण विनाश हो गया, तब इस अप्रिय सूचना से दुखी होकर धृतराष्ट्र ने संजय से कहा–संजय! तुम इस बात को ध्यान से सुन लो। मेरा विचार युद्ध के लिए बिलकुल नहीं था। मेरे लिए मेरे पुत्र तथा पांडु-पुत्र समान थे। मैं विवश था। मेरे पुत्र क्रोधवश मुझे ही दोषी मानते थे। मैं अंधा होने से असमर्थ हूं। इसके साथ पुत्रों के प्रति मोह के कारण मैं दुर्योधन आदि का अन्याय सहता आ रहा हूं। परंतु पुत्रों के दुख से मैं भी दुखी हो जाता था।

संजय! जुआ खेलने का निश्चय हो जाने पर उसके पहले और पीछे जो घटनाएं घटी हैं, उनसे मुझे अपनी विजय की आशाएं धूमिल होती गयी थीं। इससे जो मुझे अनुभव हुआ उसे मैं कहता हूं। हे सूतपुत्र संजय! मेरे बुद्धिपूर्ण वचनों को सुनकर तुम्हें पता चल जायेगा कि मैं कितना प्रज्ञाचक्षु हूं।

. संजय! जब अर्जुन द्रुपद की सभा में लक्ष्यवेध कर द्रौपदी को बलपूर्वक अपने डेरे पर ले आये, और राजे-महाराजे टुकुर-टुकुर ताकते रह गये, तभी मैंने अपनी विजय की आशा छोड़ दी थी।

. संजय! जब मैंने सुना कि अर्जुन द्वारका में बलराम और कृष्ण की बहिन सुभद्रा को बलपूर्वक रथ में बैठाकर इंद्रप्रस्थ ले आये और बलराम तथा कृष्ण इसका विरोध न कर, अपितु दहेज लेकर द्वारका से इंद्रप्रस्थ अर्जुन को समर्पित करने आये, तभी मुझे अपनी विजय की आशा धूमिल हो गयी।

. संजय! जब मैंने सुना कि अर्जुन ने खांडवदाह किया और इंद्र भी उनका कुछ नहीं कर पाये, तभी मैंने अपनी विजय की आशा छोड़ दी।

. संजय! जब मैंने सुना कि पांचों पांडव अपनी माता सहित लाक्षागृह की आग से बचकर सुरक्षित निकल गये हैं और विदुर उनके स्वार्थ के सहायक हैं, तभी मुझे अपनी विजय की आशा जाती रही।

. संजय! जब मैंने सुना कि अर्जुन की द्रौपदी पर विजय होने से पांडव तथा पांचाल नरेश द्रुपद अभिन्न हो गये, तभी मुझे अपनी विजय की आशा जाती रही।

. धृतराष्ट्र के मनोभाव का चित्रण

. संजय! जब मैंने सुना कि जरासंध जैसे बलवान राजा को भीम ने उनके राजभवन में मार डाला, तब मेरी जीत की आशा टूट गयी।

. संजय! जब मैंने सुना कि युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ के उपलक्ष्य में उनके चारों भाइयों ने चारों ओर के राजाओं पर दिग्विजय कर ली, तब मुझे अपनी जीत की आशा मिट गयी।

. संजय! जब मैंने सुना कि द्रौपदी रजस्वला की दशा में केवल एक वस्त्र पहने थी और उसे घसीटकर मेरे पुत्रों ने सभा में ला खड़ी की जहां पांडव भी उपस्थित थे, तभी मुझे अपनी विजय की आशा जाती रही।

. संजय! जब मैंने सुना कि युधिष्ठिर को शकुनि ने जुए में हराकर उनका राज्य छीन लिया। फिर भी युधिष्ठिर के चारों भाई उनका अनुगमन किये, उनका साथ नहीं छोड़े, तब मैंने अपनी विजय की आशा छोड़ दी।

. संजय! जब मैंने सुना कि पांडव युधिष्ठिर के प्रेमवश दुख पा रहे थे और अपने हृदय के भाव को प्रकाशित करने के लिए अनेक चेष्टाएं कर रहे थे, तब मेरी विजय की आशा व्यर्थ हो गयी।

. संजय! जब मैंने सुना कि युधिष्ठिर के वनवास-काल में उनके साथ हजारों स्नातक वनवासी रहते हैं और महात्मा तथा ब्राह्मण उनसे भिक्षा पाते हैं, तब मेरी विजय की आशा जाती रही।

. संजय! जब मैंने सुना कि अर्जुन ने महादेव को युद्ध में संतुष्टकर उनसे पाशुपत नामक महान अस्त्र प्राप्त कर लिया है, तभी मेरी विजय की आशा निराशा में बदल गयी।

. संजय! जब मैंने सुना कि पांडवों के वनवास-काल में उनसे पुरातन ऋषि मिलते हैं, उनसे मैत्री रखते हैं, तब मेरी विजय की आशा जाती रही।

. संजय! जब मैंने सुना कि अर्जुन स्वर्ग में जाकर इंद्र से अस्त्र-शस्त्र की शिक्षा विधिवत प्राप्त कर रहे हैं और वहां उनकी प्रशंसा हो रही है, तभी मैंने अपनी विजय की आशा छोड़ दी।

. संजय! जब मैंने सुना कि कालकेय और पौलोम जैसे अपराजित असुरों को अर्जुन ने पराजित कर दिया है, तभी मैंने विजय की आशा छोड़ दी।

. संजय! जब मैंने सुना कि युधिष्ठिर महर्षि लोमश के साथ तीर्थयात्रा में हैं और उन्होंने युधिष्ठिर को यह भी बताया है कि अर्जुन स्वर्ग में दिव्य अस्त्र प्राप्त कर लिए हैं, तब मेरी विजय की आशा जाती रही।

. संजय! जब मैंने सुना कि भीम तथा अन्य भाई कुबेर के यहां पहुंचकर उनसे मैत्री कर लिए हैं जहां मनुष्यों का पहुंचना कठिन है, तब मेरी विजय की आशा जाती रही।

. संजय! जब मैंने सुना कि कर्ण की बुद्धि पर विश्वास करने वाले मेरे पुत्र घोष–यात्रा के लिए गये और गंधर्वों द्वारा बंदी बना लिए गये और अर्जुन ने उन्हें छुड़ाया, तभी मेरी विजय की आशा व्यर्थ हो गयी।

. संजय! जब मैंने सुना कि वन में यक्ष के गूढ़ प्रश्नों का उत्तर युधिष्ठिर ने विधिवत दिया, तभी मैंने विजय की आशा छोड़ दी।

. संजय! जब मैंने सुना कि विराट की राजधानी में पांचों पांडव और द्रौपदी गुप्त रूप से रहते हैं और मेरे पुत्र उनका पता नहीं लगा सके, तभी मेरी विजय की आशा जाती रही।

. संजय! जब मैंने सुना कि द्रौपदी के प्रति अपराध करने के कारण महाबली कीचक अपने भाइयों के सहित भीम द्वारा मारा गया, तभी मेरी विजय की आशा व्यर्थ हो गयी।

. संजय! जब मैंने सुना कि राजा विराट की गायों का अपहरण करने के लिए मेरे पुत्र सेना सहित गये, तब अर्जुन ने मेरे लोगों को मार भगाया, तभी मेरी विजय की आशा व्यर्थ हो गयी।

. संजय! जब मैंने सुना कि विराट–नरेश ने अपनी प्रिय पुत्री उत्तरा को अर्जुन से ब्याहना चाहा, परंतु अर्जुन ने उसे अपने पुत्र अभिमन्यु के लिए स्वीकारा, तभी मेरी विजय की आशा व्यर्थ हो गयी।

. संजय! जब मैंने सुना कि युधिष्ठिर अपने घर–राज्य से निकाले हुए हैं, निर्धन हैं, सगे–संबंधियों से बिछुड़े हैं, फिर भी उनके पास सात अक्षौहिणी सेना इकट्ठी हो गयी है, तभी मैंने अपनी विजय की आशा छोड़ दी।

. संजय! जब मैंने सुना कि श्रीकृष्ण पांडवों के सहायक हैं, तभी मेरी विजय की आशा जाती रही।

. संजय! जब मैंने नारद के मुख से सुना कि अर्जुन और कृष्ण साक्षात नर और नारायण हैं और उन्हें मैंने स्वर्ग में ठीक से देखा है, तभी मेरी विजय की आशा व्यर्थ हो गयी।

. संजय! जब मैंने सुना कि श्रीकृष्ण कौरव तथा पांडवों में सुलह कराने के लिए आये हैं, परंतु वे असफल होकर लौट गये, तभी मुझे विजय की आशा नहीं रही।

. धृतराष्ट्र के मनोभाव का चित्रण

. संजय! जब मैंने सुना कि कर्ण और दुर्योधन ने श्रीकृष्ण को कैद कर लेने का षड्यंत्र रचा, तो श्रीकृष्ण ने अपना विराट रूप दिखाकर उन्हें मात कर दिया, तभी मुझे विजय की आशा नहीं रही।

. संजय! जब मैंने सुना कि जब श्रीकृष्ण यहां से लौट रहे थे, तब कुंती ने अकेली उनके पास जाकर अपना दुख रोया और श्रीकृष्ण ने उसे सांत्वना दी, तभी मैंने विजय की आशा छोड़ दी।

. संजय! जब मैंने सुना कि श्रीकृष्ण पांडवों के मंत्री हैं और पितामह भीष्म तथा द्रोणाचार्य उन्हें आशीर्वाद दे रहे हैं, तभी मैंने अपनी विजय की आशा छोड़ दी।

. संजय! जब कर्ण ने भीष्म से कह दिया कि जब तक आप पांडवों से लड़ेंगे तब तक मैं नहीं लड़ूंगा, और वे युद्ध से हट गये, तभी से मेरी विजय की आशा जाती रही।

. संजय! जब मैंने सुना कि श्रीकृष्ण, अर्जुन और गांडीव धनुष इकट्ठे हो गये हैं, तभी मेरी विजय की आशा जाती रही।

. संजय! जब मैंने सुना कि अर्जुन रथ के पिछले हिस्से में बैठे हतप्रभ एवं दुखी थे, और श्रीकृष्ण ने अपना विराट रूप दिखाकर सब लोकों को अपने शरीर में दिखा दिया, तभी मेरी विजय की आशा जाती रही।

. संजय! जब मैंने सुना कि भीष्म युद्ध-स्थल में प्रतिदिन दस हजार योद्धाओं का संहार कर रहे हैं, परंतु पांडव पक्ष का कोई मुख्य योद्धा नहीं मारा जा रहा है, तभी मेरी विजय की आशा फीकी हो गयी।

. संजय! जब मैंने सुना कि भीष्म ने युद्ध-स्थल में पांडवों को अपनी मृत्यु का उपाय स्वयं बता दिया और पांडवों ने उत्साहित होकर उसका पालन किया, तभी मुझे अपनी विजय की आशा नहीं रही।

. संजय! जब मैंने सुना कि अर्जुन ने अपने सामने शिखंडी को खड़ाकर उनकी आड़ से भीष्म को मार गिराया, तभी मुझे अपनी विजय की आशा नहीं रही।

. संजय! जब मैंने सुना कि बाण-शय्या पर पड़े भीष्म के संकेत से अर्जुन ने बाण से धरती को वेध कर उससे पानी निकाला और उनकी प्यास बुझाई, तभी मुझे अपनी विजय की आशा नहीं रही।

. संजय! जब मैंने सुना कि वीर शिरोमणि भीष्म पांडवों में से किसी एक को भी नहीं मार रहे हैं, तभी मुझे विजय की आशा नहीं रही।

. संजय! जब मैंने सुना कि मेरे वीर योद्धा संशप्तक अर्जुन को मारने के लिए मोर्चे पर डटे थे, परंतु उन्हें अकेले अर्जुन ने मार गिराया, तभी मेरी विजय की आशा जाती रही।

. संजय! जब मैंने सुना कि द्रोणाचार्य के चक्रव्यूह को अकेला अभिमन्यु ने तोड़-फोड़कर छिन्न-भिन्न कर दिया, तब मुझे अपनी विजय की आशा नहीं रही।

. संजय! जब मैंने सुना कि मेरे बड़े-बड़े योद्धा अर्जुन का बाल बांका न कर सके, किंतु सब मिलकर बालक अभिमन्यु को घेरकर मार डाले, तभी मुझे अपनी विजय की आशा नहीं रही।

. संजय! जब मैंने सुना कि मेरे मूढ़ पुत्र बालक अभिमन्यु को मारकर हर्षित हो रहे हैं और अर्जुन ने जयद्रथ को मारने की भीषण प्रतिज्ञा कर ली है, तभी मुझे विजय की आशा नहीं रही।

. संजय! जब मैंने सुना कि जयद्रथ को मार देने के बाद अर्जुन के रथ के घोड़े प्यास से व्याकुल थे और श्रीकृष्ण ने उन्हें रथ से खोलकर स्वयं पानी पिलाया और पुनः रथ में जोता और अर्जुन सकुशल लौट गये, तभी मुझे अपनी विजय की आशा नहीं रही।

. संजय! जब मैंने सुना कि वृष्णिवंशी सात्यकि ने अकेले ही द्रोणाचार्य की सेना का तहस-नहस कर दिया, तब मुझे अपनी विजय की आशा नहीं रही।

. संजय! जब मैंने सुना कि भीम कर्ण की पकड़ में फंस गये थे, परंतु कर्ण ने उन्हें तिरस्कारपूर्वक झिड़ककर और धनुष की नोक चुभाकर ही छोड़ दिया, तब मुझे अपनी विजय की आशा नहीं रही।

. संजय! जब मैंने सुना कि द्रोणाचार्य, कृतवर्मा, कृपाचार्य, कर्ण, अश्वत्थामा तथा शल्य ने भी सिंधुराज जयद्रथ का वध सह लिया, बदला नहीं लिया, तभी मुझे अपनी विजय की आशा नहीं रही।

. संजय! इंद्र ने कवच के बदले कर्ण को एक दिव्य शक्ति दे रखी थी, और कर्ण ने उसे अर्जुन पर छोड़ने के लिए सुरक्षित रखा था, परंतु श्रीकृष्ण ने अपने छल से उसे भयंकर राक्षस घटोत्कच पर छोड़वाकर कर्ण को उस दिव्य शक्ति से रहित कर दिया, तभी मैंने अपनी विजय की आशा छोड़ दी।

. संजय! जब मैंने सुना कि द्रोणाचार्य अपने पुत्र की मृत्यु के शोक में अस्त्र-शस्त्र छोड़कर आमरण अनशन में रथ के पास अकेले बैठे थे, उस

समय धृष्टद्युम्न ने युद्ध की मर्यादा छोड़कर उन्हें मार डाला, तब मैंने अपनी विजय की आशा छोड़ दी।

. संजय! जब मैंने सुना कि द्रोणाचार्य की हत्या के बाद अश्वत्थामा ने दिव्य नारायण अस्त्र का प्रयोग किया, परंतु उससे वह पांडवों का कुछ नहीं कर पाया, तब मुझे विजय की आशा नहीं।

. संजय जब मैंने सुना कि भीम ने अपने भाई दु:शासन को मारकर उसका रक्त पीया, परंतु वहां उपस्थित सत्पुरुषों में से किसी एक ने भी भीम को ऐसा करने से नहीं रोका, तभी मुझे विजय की आशा नहीं रही।

. संजय! अब मैंने सुना कि कर्ण को अर्जुन ने मार डाला, तब मुझे अपनी विजय की आशा नहीं रही।

. संजय! जब मैंने सुना कि युधिष्ठिर अश्वत्थामा, दु:शासन, कृतवर्मा को जीत रहे हैं, तब मुझे विजय की आशा नहीं रही।

. संजय! जब मैंने सुना कि युधिष्ठिर ने मद्रराज शल्य को मार डाला, तब मुझे अपनी विजय की आशा नहीं रही।

. संजय! जब मैंने सुना कि सहदेव ने शकुनि को मार डाला, तब मेरी विजय की आशा फीकी हो गयी।

. संजय! जब मैंने सुना कि दुर्योधन का रथ टूट गया और वह थक कर एक सरोवर के जल में अकेला ही सो गया। पांडव श्रीकृष्ण के साथ उस सरोवर पर खड़े होकर दुर्वचन कह रहे हैं और गदा युद्ध के लिए ललकार रहे हैं। अंततः दुर्योधन गदा युद्ध में बड़ी कुशलता से युद्ध करने लगा। परंतु कृष्ण के संकेत से भीमसेन ने गदा युद्ध की मर्यादा के विरुद्ध जांघ में गदा मारकर दुर्योधन को मार डाला, तब तो मेरे हृदय में विजय की आशा रह ही नहीं गयी।

. संजय! जब मैंने सुना कि अश्वत्थामा आदि ने सोते हुए पांचाल नरेशों और द्रौपदी के होनहार पुत्रों को मार डाला, तब मुझे अपनी विजय की आशा नहीं रही।

. संजय! जब मैंने सुना कि भीमसेन से खदेड़े जाकर अश्वत्थामा ने क्रोध कर सींक के बाण पर ब्रह्मास्त्र का प्रयोग कर दिया जिससे पांडवों का गर्भ में रहा हुआ वंश भी नष्ट हो गया, तभी मुझे विजय की आशा नहीं रही (आदि पर्व, अध्याय)।

मीमांसा

किसी पंडित ने पूरे महाभारत का ध्यान रखकर युद्ध की मुख्य-मुख्य घटनाएं धृतराष्ट्र से कहला डाली हैं। उसमें अर्जुन का महादेव से, स्वर्ग से अस्त्र-शस्त्र प्राप्ति, कृष्ण का अपनी देह में पूरे विश्व का दिखाना आदि अतिशयोक्तियां भी गुंफित हैं।

. धृतराष्ट्र का विलाप, संजय का सांत्वना देना

"हाय! गांधारी की दशा शोचनीय है। अब उसके पुत्र-पौत्र कोई न रहा। हाय, कितने दुख की बात है! मैंने सुना है कि इस भयंकर युद्ध में केवल दस व्यक्ति बचे हैं। मेरे पक्ष के तीन–कृपाचार्य, अश्वत्थामा और कृतवर्मा, और पांडव पक्ष के सात–कृष्ण, सात्यकि और पांचों पांडव।"

धृजराष्ट्र ऐसा कहते-कहते मूर्च्छित हो गये। फिर चेत में आकर कहने लगे–संजय! अब मैं प्राण त्यागना चाहता हूं। अब जीवन रखना निरर्थक है।

संजय ने कहा–राजन! आपने बड़े-बड़े प्रतापवान राजाओं के चरित्र सुने हैं, जिन्होंने दिग्विजय कर भूमंडल जीता और बहुत दिन राज भोगा, परंतु अंत में काल के गाल में चले गये। इसके साथ संजय ने राजाओं की एक लंबी सूची प्रस्तुत की है। संजय ने कहा कि पद्मों की संख्या में बड़े-बड़े राजा सब छोड़कर चले गये जैसे आपके पुत्रों की मृत्यु हुई है। "काल प्राणियों की सृष्टि करता है और काल ही उनको मारता है। प्रजा का संहार करने वाले काल को काल ही शांत करता है।" यथा–

कालः सृजति भूतानि कालः संहरते प्रजाः।
संहरन्तं प्रजाः कालं कालः शमयते पुनः , ,

इस प्रथम अध्याय के अंत में कहा गया है कि चारों वेदों से महाभारत का महत्त्व अधिक है। महाभारत का पाठ करने वाले को महापुण्य मिलता है, गर्भहत्या आदि पापों का नाश होता है।

मीमांसा

वेदों का महत्त्व घटाकर आंकना लेखक की अल्पज्ञता है। महाभारत का अपना महत्त्व है, किंतु वेदों को उससे कम महत्त्व का कहना छिछिलापन है। महाभारत के पाठ से गर्भहत्या आदि का पाप नष्ट हो जाता है, यह कथन तो

भयंकर प्रमाद है। किसी पाठ से पाप नहीं नष्ट होता, अपितु पाप कर्म छोड़ने से पाप नष्ट होता है।

. समंत पंचक, अक्षौहिणी सेना और ग्रंथ की विषय सूची

परशुराम जी ने क्षत्रियों पर क्रोध करके उनका अनेक बार संहार किया और समंत पंचक क्षेत्र में रक्त के पांच सरोवर भर दिये। परशुराम जी ने उसी रक्त से अपने पितरों को रक्तांजलि देकर उनको तृप्त किया। फिर ऋचीक आदि पितृगण आकर उनसे बोले कि तुम्हारी इस पितृभक्ति से हम प्रसन्न हैं। जो वर मांगना हो मांग लो। परशुराम ने कहा कि मेरे इस हत्याकर्म का पाप नष्ट हो जाय और ये रक्त से भरे पांच सरोवर प्रसिद्ध तीर्थ हो जायं। पितरों ने ऐसा ही आशीर्वाद दिया, और कहा कि अब बचे-खुचे क्षत्रियों को न मारा जाय।

जहां ये रक्त के पांच सरोवर थे, इसी क्षेत्र में पीछे के समय में कौरव-पांडवों की अठारह अक्षौहिणी सेना इकट्ठी हुई थी और युद्ध हुआ था। "*समेतानाम् अन्तो यस्मिन् स समन्तः* अर्थात समागत सेनाओं का अंत हुआ हो जिस स्थान पर उसे समन्त कहते हैं।" पंचक है पहले के परशुराम द्वारा मारे गये क्षत्रियों के रक्त से भरे पांच सरोवर। इस प्रकार यह कुरुक्षेत्र का समंत पंचक है।

एक रथ, एक हाथी, पांच पैदल सैनिक और तीन घोड़े, इन्हें 'पत्ति' कहते हैं। तीन पत्ति का एक सेनामुख, तीन सेनामुख का एक गुल्म, तीन गुल्म का एक गण, तीन गण की एक वाहिनी, तीन वाहिनियों की एक पृतना, तीन पृतना की एक चमू, तीन चमू की एक अनीकनी, और दस अनीकनी की एक अक्षौहिणी होती है।

दूसरे ढंग से कहा गया है– रथ, हाथी, घोड़े तथा पैदल; यह चतुरंगिणी सेना एक अक्षौहिणी है। सात अक्षौहिणी पांडवों की सेना थी और ग्यारह अक्षौहिणी कौरवों की सेना थी।

इसके बाद इस अध्याय में पर्वों और विषय-वस्तुओं की विस्तारपूर्वक सूची दी गयी है जो तीन सौ नब्बे ( ) श्लोकों में गयी है। श्लोक – में बताया गया है कि ब्राह्मण दिन में जो पाप करता है सायंकाल के महाभारत के पाठ से छूट जाता है और रात को जो पाप करता है, प्रातःकाल के पाठ से छूट

. महाभारत, प्रथम खंड, पृष्ठ , गीता प्रेस, गोरखपुर।

जाता है (अध्याय)।

मीमांसा

क्षत्रियों के पास शासन और धनबल था और ब्राह्मणों के पास विद्या, तप, कर्मकांड तथा पूजा-पाठ थे। धीरे-धीरे क्षत्रिय ब्राह्मणों को सताने लगे। इसका पता अथर्ववेद से ही चलता है। अथर्ववेद, कांड सूक्त , मंत्र – ; सूक्त , मंत्र – ; कांड , सूक्त , मंत्र – ; – देखें। इसके लिए इन पंक्तियों के लेखक की 'वेद क्या कहते हैं?' नाम की पुस्तक का वां संदर्भ– 'ब्राह्मणों के धन पर क्षत्रियों का अत्याचार' देखने योग्य है। एक मंत्र का भाव लें–"जो क्षत्रिय अपनी शूरवीरता के कारण बहुत बढ़ गये थे, यहां तक कि उनकी कीर्ति आकाश चूमती थी, वे राजा संजय ब्राह्मण भृगु की हिंसा करने से पतित हो गये।"

परशुराम भृगुवंशी थे। उन्होंने क्षत्रियों को मारा होगा, कई बार या इक्कीस बार वे क्षत्रियों को मारते रहे और क्षत्रियों की पीढ़ी-दर-पीढ़ी मारने के लिए वे जीवित रहे, यह सब अतिशयोक्ति है। वे क्षत्रियों को मारकर उनके रक्त से पांच सरोवर भर दिये, घोर अतिशयोक्ति है। वस्तुतः ब्राह्मणों ने परशुराम का अत्यंत क्रूर वर्णन कर के क्षत्रियों को धमकाया अधिक है।

अक्षौहिणी सेना का वर्णन पहले वाला भ्रामक है, पीछे वाला सही लगता है। महाभारत के पाठ से रात-दिन में किये गये पापों से छूटने की बात भांग के गहरे नशे में होकर लिखी गयी है। यह वानस्पतिक भांग न होकर घोर अविवेक का भांग है। वस्तुतः पाप-कर्म छोड़ना उसके परिणाम से बचने का रास्ता है। यह सब वचन वेदव्यास पर थोपना गलत है। पंडितों का धरघुसेड़ बहुत है।

. जनमेजय, सरमा और सोमश्रवा

उग्रश्रवा कहते हैं–परीक्षित के पुत्र जनमेजय अपने भाइयों के साथ कुरुक्षेत्र में बहुत दिनों तक चलने वाले यज्ञ में बैठे थे। उनके तीन भाई थे– श्रुतसेन, उग्रसेन तथा भीमसेन। ये भी उस यज्ञ में बैठे थे। इसी बीच देवताओं की कुतिया सरमा का पुत्र सारमेय वहां आ गया। जनमेजय के भाइयों ने उस कुत्ते को मारा। वह रोता हुआ अपनी माता के पास गया। माता ने पूछा–बेटा!

. **अतिमात्रमवर्धन्त नोदिव दिवमस्पृशन्।**
भृगुं हिंसित्वा सृञ्जया वैतहव्याः पराभवन्
(अथर्ववेद, कांड सूक्त मंत्र)

क्यों रोता है? तुम्हें किसने मारा है? सारमेय ने कहा–मुझे जनमेजय के भाइयों ने मारा है। माता सरमा ने कहा–तुमने उनका कोई अपराध किया होगा? पुत्र ने कहा–मैंने कोई अपराध नहीं किया। मैंने न उनकी हवन–सामग्री को देखा और न उसे चाटा ही।

अपने पुत्र की उक्त बात सुनकर सरमा बहुत दुखी हुई और वह जनमेजय के भाइयों के पास आयी और उसने उनसे कहा–मेरे पुत्र को आप लोगों ने क्यों निरपराध मारा? जनमेजय के भाई सरमा के प्रश्न का कोई उत्तर न दे सके। तब सरमा ने उनसे कुपित होकर कहा–तुम लोगों की उद्दंडता का यह परिणाम होगा कि तुम्हारे ऊपर अकस्मात भय उपस्थित होगा जिसका पहले से कोई पता नहीं रहेगा।

सरमा की उक्त बातें सुनकर जनमेजय बहुत दुखी हुए। यज्ञ समाप्त होने पर जनमेजय हस्तिनापुर में आये। वे योग्य पुरोहित खोजने लगे जो उनके अपराध को शांत कर सके। एक दिन जनमेजय शिकार करने वन में गये जो उनके ही राज्य में था। उन्होंने वहां एक आश्रम देखा। उस आश्रम में श्रुतश्रवा नाम के ऋषि रहते थे। उनके पुत्र का नाम था सोमश्रवा। सोमश्रवा तपस्यालीन स्वभाव के थे। जनमेजय ने श्रुतश्रवा से निवेदन किया कि वे अपने पुत्र को पुरोहित बनाने के लिए उन्हें दें। श्रुतश्रवा ने कहा–राजन! मेरा यह पुत्र सोमश्रवा सर्पिणी के गर्भ से पैदा हुआ है। यह बड़ा तपस्वी तथा स्वाध्यायशील है। एक समय एक सर्पिणी ने मेरा वीर्यपान कर लिया था। उसी से यह सोमश्रवा पैदा हुआ। यह बहुत समर्थ व्यक्ति है। ध्यान रहे, इसकी यह आदत है कि यदि कोई ब्राह्मण इससे कुछ याचना करे तो यह उसे अवश्य दे देगा। यदि तुम उदारता पूर्वक इसकी दान प्रवृत्ति को सह सको तो इसको पुरोहित के रूप में ले जाओ। जनमेजय ने कहा–मैं सब कुछ इनकी रुचि के अनुसार करूंगा।

राजा जनमेजय सोमश्रवा को लेकर राजभवन हस्तिनापुर आये और उन्होंने भाइयों को सावधान कर दिया कि मैं इन्हें (सोमश्रवा को) अपना पुरोहित चुनकर लाया हूं। ये जो आज्ञा दें तुम्हें बिना सोच-विचार किये वैसा करना है। जनमेजय के तीनों भाई सोमश्रवा की आज्ञा के अनुसार काम करने लगे।

राजा जनमेजय तक्षशिला को जीतने के लिए चले गये और उन्होंने उसे जीत कर अपने अधिकार में कर लिया (अध्याय)।